आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सुगंधा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



40 वाँ अंक
वर्ष 2021 – 2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017



कुर्सियों पर बाएं से:
श्री हर्षित तोदी (उप महालेखाकार), सुश्री नाज़ली जे. शाईन (प्रधान महालेखाकार)

खड़े हुए बाएं से:
सुश्री एकता (हिन्दी अधिकारी), श्री महेन्द्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सुगंधा

40 वां अंक

वर्ष 2021 – 2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब,
चण्डीगढ़ 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक : **सुश्री नाज़ली जे. शाईन**
प्रधान महालेखाकार

सरंक्षक : **श्री हर्षित तोदी**
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक : **सुश्री एकता**
हिन्दी अधिकारी

सह संपादक : **श्री महेन्द्र सिंह**
वरिष्ठ अनुवादक

मुख पृष्ठ : **सैक्टर 31, चण्डीगढ़ में स्थित जापानी गार्डन**
(सौजन्य - इंटरनेट)

अंक : 40 वाँ अंक

प्रकाशक : **राजभाषा कार्यान्वयन समिति,**
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चण्डीगढ़

मूल्य : **राजभाषा के प्रति निष्ठा**

मुद्रक : **लक्ष्मी ग्राफिक्स**
बूथ नं. 8, सैक्टर 17-सी, चण्डीगढ़ – 160017

नोट: रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री का संदेश		4–6
मुख्य संरक्षक का संदेश		7
संरक्षक का संदेश		8
संपादकीय		9
पाठकों के पत्र		10

आलेख

कोविड का आम जन–जीवन पर प्रभाव	रजनेश कुमार	12–13
संस्मरणः एक अविस्मरणीय यात्रा	रमेश कुमार शर्मा	14–17
बढ़ता तकनीकी विकास और घटती मानसिक क्षमता	दिलदार सिंह चौहान	18–19
रामायण का एक मर्मस्पर्शी दृष्टान्त	रमेश	20–21
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)	राहुल रॉय	22–23
बेचारी नाक (व्यंग्य)	सुरेन्द्र प्रसाद	24
तितली रानी	विक्रम सिंह	25–27
धर्म परिवर्तन	बीर सिंह	28

कविता

हाँ, मैं गाँव हूँ	एकता	30
कलयुग	कुलविंदर सिंह	31–32
अभागी प्रकृति	रोहित सैनी	33
कलयुग की सीता	तमन्ना सहगल	34–35
जीवन पथ	राहुल रॉय	36
नारी दिवस	अक्षिता सिंह	37
कुदरत	भूपिन्द्र सिंह मटौरिया	38
बेटियां	अंजू बाला	39–40

कार्यालयीन समाचार

कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ		41–42
सेवानिवृत्ति		43
श्रद्धांजलि		44

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़



मुख्य संरक्षक का सन्देश

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी के लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व है। किसी भी कार्यालय की पत्रिका वहां के कार्मिकों के भावों और विचारों का दर्पण होती है।

इस आपाधापी भरे जीवन में यदि कार्यालय के कर्मचारी इस पत्रिका के माध्यम से कुछ क्षण अपनी रचनात्मकता को दे पाते हैं तो विभागीय पत्रिका का प्रकाशन सही मायनों में सार्थक हो जाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सुगंधा' पत्रिका का यह अंक भी पूर्व अंकों की भांति हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार कि दिशा में प्रेरणादाई सिद्ध होगा। मैं संपादक मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ, जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

हर्षित तोदी
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़



संरक्षक का सन्देश

हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंधा' के 40 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं सभी को बधाई देता हूं। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी पदाधिकारियों को अपनी भावनाओं, अनुभूतियों एवं कल्पना शक्ति को उजागर करने का अवसर मिलता है। आशा है कि आप सभी पाठकों को हर बार की तरह इस बार भी 'सुगंधा' पत्रिका का यह अंक पसंद आएगा।

इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों और संपादक मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

हर्षित तोदी

सत्यमेव जयते



संपादकीय

हमारा देश अनेक भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परंपराओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहां संसार के चार भाषा परिवारों भारोपीय, द्रविड़, तिब्बती, बर्मी और आग्नेय की अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। इसलिए भारत को बहुभाषी देश कहा जाता है। हिंदी भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत भाषा से लेकर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि सोपानों से गुजरती हुई हिंदी आज समूचे भारत की संपर्क भाषा बन गई है। हिंदी हमारे देश के जनमानस की भाषा है और लोग इसमें अपने विचारों की अभिव्यक्ति सहजता से कर पाते हैं।

'सुगंधा' पत्रिका के इस अंक से राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के कार्य को गति मिलेगी। रचनाकारों ने हिंदी के प्रति प्रेम को, अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। आशा करती हूं कि 'सुगंधा' पत्रिका का यह अंक आप सभी को रुचिकर लगेगा।

इस पत्रिका से जुड़े सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूं। पत्रिका को और अधिक परिष्कृत करने हेतु आप सभी के सुझाव एवं मार्गदर्शन का 'सुगंधा' पत्रिका संपादक मंडल हृदय से सम्मान करता है।

एकता
हिंदी अधिकारी

पाठकों के पत्र

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय
महालेखाकारों के कार्यालय परिसर, सैफाबाद, हैदराबाद - 500004
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF COMMERCIAL AUDIT
AG's OFFICE COMPLEX, SAIFABAD, HYDERABAD-500004

सं.- म.नि.वा.लेप./घ/हि.अ./हि.पत्रिका/पावती/2021-22/ ३२ दिनांक - २४.02..2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब
चन्डीगढ-160017

विषयः- 'सुगंधा' (39वाँ अंक) की पावती के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'सुगंधा' (39वाँ अंक) प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-साज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। श्री नवीन कुमार (व.लेप.अ.) की "कितना भीतर बदल गया है", श्री मुकेश कुमार (स.लेखा अधिकारी) की "निरंतरता", श्री योगेश कुमार मिश्र (व. अनुवादक) की "वीतरागविषयं वा चित्तम", सुश्री प्रवीण भसीन (व.लेप.) की "झूठ और सच" और श्री राहुल (क. अनुवाद अधिकारी) की "सीखो और सिखाओ" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सारांशतः राजभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो ऐसी कामना है।

भवदीय,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ.पत्रिका/2021-22/37 दिनांक-30.03.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
प्लाट स.-21, सेक्टर- ई.,
चंडीगढ़-160017
ईमेल- agaupunjab@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका **"सुगंधा"** के **39वें (2020-21)** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"सुगंधा"** का **39वाँ (वर्ष 2020-21)** अंक प्राप्त हुआ , एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री प्रवीण भसीन , वरि. लेखापरीक्षक	झूठ और सच
2.	श्री सुदेश कुमार, वरि. लेखापरीक्षक	मोबाईल का संतुलित उपयोग
3.	सुश्री शिवम खन्ना , वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	चरित्र का मूल्य
4.	श्री मनोज मीणा , वरि. लेखापरीक्षक	कैसा लगता है

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

Scanned by CamScanner

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या: हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/345
दिनांक: 03.03.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब
चण्डीगढ़ – 160 036

विषय : कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा ई-पत्रिका "सुगंधा" के 39वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांक:हि.क./सुगंधा 39/2021-22/402, दिनांक:18.02.2022 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी ई-पत्रिका "सुगंधा" के 39वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है। आशा है कि यह पत्रिका कार्यालयी काम-काज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

भवदीय,

04/03/22
वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

भारतीयलेखापरीक्षाऔरलेखाविभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालिगाँव, गुवाहाटी
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY, MALIGAON, GUWAHATI

संख्या: **प्र/10-4/2010/82 (पत्रिका)**
दिनांक: **14/03/2022**

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
कार्यालय प्रधान महालेखाकर (लेखापरीक्षा),पंजाब
चंडीगढ़,

विषय: वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंधा' के 39वें अंक की प्राप्ति के संदर्भ में

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 39 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक है।विशेष रूप सेसुश्री परवीन भसीन की 'झूठ और सच',श्री सुदेश कुमार की 'मोबाइल का संतुलित उपयोग'तथा श्रीमती संतारा देवी की'किसी का तिरस्कार न करें'रचनाएँ ज्ञानवर्धक व रुचिकर हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

(मेरीना सिमते)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशा.)

Northeast Frontier Railway, Maligaon, Guwahati – 781 011, Assam
Phone: 91-361-2676099, Fax: 91-361-2676211. E-mail: pdarlynefr@cag.gov.in

आलेख

हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2021 में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान



कोविड का आम जन–जीवन पर प्रभाव

–रजनेश कुमार

कोविड **(COVID)** – कोरोना वायरस डिज़ीज़, एक विषाणु जनित रोग है। विषाणु का इतिहास में मानव जीवन पर उसका प्रभाव सदियों पुराना है। प्राचीन काल से ही अनेक विषाणु जनित बीमारियां मानव जीवन को प्रभावित करती आई हैं। शुरुआत में विषाणुजनित रोग एक महामारी के रूप में आते हैं और शनैः शनैः मनुष्य के शरीर में उसके विरुद्ध रोग–प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है और वह उसके जीवन की आम बीमारियों की तरह हिस्सा बन जाते हैं। विषाणुजनित रोग भी प्राकृतिक आपदाओं की तरह है, जो कि प्रकृति अपना संतुलन स्थापित करने के लिए समय–समय पर मानवीय जीवन में लाती रहती है। अन्य महामारियों व प्राकृतिक आपदाओं की तरह कोविड महामारी ने भी मानव जीवन के प्रत्येक पहलु पर प्रभाव डाला है। यह एक वैश्विक महामारी बनकर उतरी, जिसने पिछले 2 से अधिक वर्षों से मानवीय जीवन को प्रभावित किया है।

आज समस्त विश्व भौगोलिक दूरियों व सीमाओं के बावजूद भी एक गाँव बना हुआ है। जिस तरह गाँव में एक परिवार पर आई विपदा समस्त ग्रामीणों को प्रभावित करती है, उसी तरह आज के इस वैश्विक गाँव में एक जगह आई कोविड महामारी ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। पिछले दो वर्षों में विश्व में करोड़ों लोग इस से संक्रमित हुए, लाखों मौतें हुईं, जिसने मानव जाति के विकास के पहिये को रोक दिया। अन्ततः वैज्ञानिकों ने इसकी दवा बनाई और इस वैश्विक गाँव को पुनः गतिमान किया।

कोविड का शारीरिक प्रभाव

कोविड ने भी अन्य विषाणुजनित बीमारियों की तरह मनुष्य को शारीरिक रूप से काफी प्रभावित किया। मनुष्य के फेफड़े, हृदय व रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर किया है। जो लोग इस बीमारी से प्रभावित हुए, उनमें अनेक अन्य बीमारियां होने लगी। इस तरह कोविड का बहुत ही बुरा प्रभाव मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ा।

कोविड का मानसिक प्रभाव

कोविड की बीमारी के संक्रामक होने की वजह से मानवीय मेल–मिलाप को रोक दिया गया। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परन्तु उसको दो वर्षों से एकाकी जीवन जहाँ है जैसा है, वहीं रहने को मजबूर कर दिया, जिससे उसके मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। कुंठा, अवसाद, अकेलापन जैसी बीमारियों का जन्म हुआ।

कोविड का आर्थिक प्रभाव

कोविड की वजह से उद्योग धंधे बंद हो गये। वैश्विक व्यापार ठप्प होने से लोगों को काफी आर्थिक नुकसान हुआ। वैश्विक बेरोज़गारी में काफी बढ़ोतरी हुई। होटल व्यवसाय, पर्यटन, रियल एस्टेट, व्यापार इत्यादि बुरी तरह प्रभावित हुए और इनसे जुड़े अनेक लोग अवसाद में चले गए। आत्महत्या जैसे कदम भी आर्थिक प्रभाव की वजह से लोगों को उठाने पड़े ।

कोविड का सामाजिक प्रभाव

कोविड का सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक ढ़ाँचे पर पड़ा। इस महामारी ने वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को ही बदल दिया। देश, दुनिया, घर, परिवार, व्यक्तियों सभी को बांट दिया। व्यक्ति जो सुबह से शाम तक दुनिया की आपाधापी में लगा रहता था, उसको घर पर बैठाकर अपने जीवन पर पुनर्विचार करने पर मजबूर कर दिया। कोविड के अनेक बुरे प्रभावों के साथ एक अच्छा प्रभाव यह भी रहा कि व्यक्ति अपने परिवार से जुड़ा। वह अपने घर परिवार को समय देने लगा। आपसी प्रेम सहयोग व समन्वय में बढ़ोतरी हुई।

कोविड का दार्शनिक प्रभाव

कोविड की वजह से लोगों का जीवन के प्रति नज़रिया बदला। मनुष्य अर्थयुग से बाहर भी सोचने लगा।

नवीन तकनीकों का अविष्कार

कोविड की वजह से कार्यालय में काम करने के तौर–तरीकों, शिक्षा के क्षेत्र आदि में नवीन तकनीकों का इस्तेमाल होने लगा। इस तरह कोविड के मानव जीवन के बुरे प्रभाव के साथ–साथ कुछ अच्छे प्रभाव भी पड़े जिन्होनें मानव जीवन को एक नया मोड़ व दिशा प्रदान की। जीवन जीने के लिए नए तौर–तरीकों का विकास हुआ।

"जिस भाषा में गोस्वामी तुलसीदास
जैसे कवि ने कविता की हो, वह अवश्य ही पवित्र है और
उसके सामने कोई भाषा नहीं ठहर सकती ...."

– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी



संस्मरणः एक अविस्मरणीय यात्रा

—रमेश कुमार शर्मा

बात कल की सी लगती है, लेकिन 2016 की है, मैं कार्यालय महालेखाकार, हरियाणा के सी.आर.टी. अनुभाग में कार्यरत था। मेरे परिवार के लिए यह यात्रा एक सपने से कम नहीं थी। यात्रा होम टाउन एल.टी. सी. के बदले अंडमान निकोबार की थी, जो कि उस समय कोलकाता तक ट्रेन से तथा कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर तक एयर इंडिया के जहाज से की जानी थी। मैंने अपने परिवार के साथ इस यात्रा पर जाने का निश्चय किया था। मेरी धर्मपत्नी ने अपनी सहेली जो कि मेरे सहकर्मी की पत्नी है, उससे इस यात्रा का ज़िक्र कर दिया जो कि हमारे पड़ोसी भी हैं। बात मई 2016 की है, मैं एयर इंडिया के कार्यालय में टिकट बुक करवाने हेतु गया था। मेरे पड़ोसी जो कि मेरे सहकर्मी भी हैं उनका फोन मुझे आया कि शर्मा जी आप अंडमान निकोबार जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं, तो हमें भी जाना है। मैंने कहा हम तो तकरीबन 10 दिन के लिए जा रहे हैं साथ में भुवनेश्वर, जगन्नाथ, पुरी, कोणार्क, मायापुर, इस्कॉन मंदिर भी जाएंगे। उन्होंनें कहा कि हम भी जाना चाहते हैं आप कृपया हमारी भी टिकटें बुक करवा दें। मैंने एयर इंडिया से उनकी भी टिकटें बुक करवा दीं, साथ में एक ट्रैवल एजेंट के माध्यम से दिल्ली से कटक द्वितीय श्रेणी की राजधानी एक्सप्रेस से, वापसी की कोलकाता से दिल्ली दुरंतो एक्सप्रेस की प्रथम श्रेणी स्लीपर की भी टिकट बुक करवा दी थी। 15 जून से 25 जून 2016 के लिए यात्रा निश्चित हो गई। सभी टिकटें बुक होने के उपरांत मैंने भगवान जगन्नाथ ट्रस्ट के कमरों की बुकिंग हेतु फोन किया तो वहां के मैनेजर ने मुझे बताया कि कमरे तो प्रभु जी आपके बुक हो जाएंगे, लेकिन 15 जून से 29 जून तक भगवान जगन्नाथ का मंदिर बंद रहेगा आप दर्शन नहीं कर पाएंगे तथा यह भी कहा कि आपने जून में आने का प्रोग्राम जो बनाया है, उस समय तो पुरी व अंडमान निकोबार में बहुत ही खतरनाक समुद्री तूफान आते हैं। जब वह बात मैंने सुनी तो मैं सकपका गया मैंने तुरंत फैसला लिया कि यात्रा की अवधि जून 2016 की अपेक्षा मई 2016 की रखते हैं मैंने सभी टिकटें कैंसिल करवा कर मई में जाने का निश्चय किया। अपने पड़ोसी से इसका ज़िक्र भी किया उन्होंने अपनी टिकटें कैंसल नहीं करवाई। मैंने अपनी सारी टिकटें कैंसिल करवा कर मई 2016 में जाने का निश्चय किया। जिसमें मुझे तकरीबन 40000 रूपये का नुकसान भी उठाना पड़ा। मेरे इस निर्णय से पड़ोसी ने मुझसे बोलना तक छोड़ दिया, लेकिन भगवान जगन्नाथ के दर्शन में समुद्री तूफान की वजह से यात्रा में व्यवधान ना हो ऐसा मेरा सोचना था।

हालांकि मेरी धर्मपत्नी व बच्चे कहते रहे कि किसी अन्य परिवार के साथ चलते तो यात्रा अच्छी होती। अकेले

जाना ठीक नहीं आदि आदि। लेकिन मेरे अडिग निर्णय के आगे वह मन मार कर चुपचाप जाने को तैयार हो गए। मैंने दोबारा सारी बुकिंग करवाई।

मैंने डेढ़ लाख रुपए अपने भविष्य निधि से अग्रिम लिया और पचास हज़ार के करीब मेरे पास बैंक के बचत खाते में था। मैंने एल.टी.सी. पर जाते वक्त यह कभी नहीं सोचा कि मेरी पात्रता क्या है। मैंने चंडीगढ़ से दिल्ली एयरपोर्ट की वोल्वो बस की चार टिकटें बुक करवाई। दिल्ली से भुवनेश्वर इंडिगो एयरलाइंस की 4 टिकटें व पुरी से कोलकाता शताब्दी एक्सप्रेस की चेयर कार की बुकिंग कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर व वापसी कोलकाता से दिल्ली इंडिगो एयरलाइन की बुकिंग करवाई तथा दिल्ली से चंडीगढ़ वोल्वो की बुकिंग करवाई।

मैं अपने परिवार के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर 28–05–2016 को सुबह 4:00 बजे पहुंचा। हम भुवनेश्वर जाने वाली फ्लाइट लेने के लिए लाइन में लगे। मेरे व मेरी बेटी के पास तो अपना आधार व पैन कार्ड था, लेकिन मेरी पत्नी एवं बेटे के पास आधार व पैन कार्ड नहीं था। क्योंकि चंडीगढ़ से दिल्ली प्रस्थान के समय वह अपना पर्स टेबल पर भूल गई। मैंने अपना अथक प्रयास किया फ्लाइट पकड़ने के लिए। मेरी पत्नी तो हताश होकर कह रही थी अब कुछ नहीं हो सकता वापस चलते हैं, क्योंकि एयरलाइंस वालों के एयरपोर्ट अथॉरिटी के सिक्योरिटी वालों ने अपनी असमर्थता जताई, पर मैं हार कहां मानने वाला था। मुझे एक सज्जन जो कि अन्य कंपनी का था, अपने कंप्यूटर पर व्यस्त था उसका एयरलाइन अथॉरिटी से कोई संबंध नहीं था, उसमें उम्मीद की किरण नजर आई। सुबह के 5:30 बज चुके थे, मैं उसके पास गया उसे अपनी व्यथा सुनाई पर उसने भी अपनी असमर्थता जाहिर की पर मेरे बार–बार आग्रह करने पर उसने चंडीगढ़ की वोटर लिस्ट निकाल कर मुझे प्रिंट दे दिया, जिससे मैं सिक्योरिटी व एयरलाइन वालों को यह समझाने में कामयाब रहा कि हम सही हैं और वोटर लिस्ट में हमारे पूरे परिवार का नाम चेक करवा कर जहाज पकड़ने की अनुमति प्राप्त करने में कामयाब रहा। यह संघर्ष मेरी जिंदगी का अविस्मरणीय संघर्ष बन गया व भगवान जगन्नाथ पर मेरी पूर्ण आस्था रंग लाई। हमने इंडिगो की फ्लाइट पकड़कर सुकून की सांस ली। रास्ते में मेरा परिवार गदगद होकर भगवान जगन्नाथ का धन्यवाद कर रहा था। 28–05–2016 को हम सुबह 9:30 भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर पहुंच गए। वहां से टैक्सी पकड़कर श्री कृष्ण मंदिर (इस्कॉन) पहुंचे। एक कमरा बुक करवाया वहा स्नानादि करके मंदिर में दर्शन किए। भगवान जगन्नाथ का एक स्वरूप वहां भी विराजमान था। मैंने मन ही मन भगवान का धन्यवाद किया। वहां से टैक्सी पकड़कर श्री लिंगराज के मंदिर पहुंचे जो कि भगवान शिव का एक ऐतिहासिक मंदिर है। मंदिर में लंबी लाइन लगी थी। दर्शन करके जैसे ही हम बाहर आए एक ब्रांड न्यू टैक्सी मंदिर के बाहर खड़ी थी हमने पूछा कि पुरी चलोगे, उसने कहा 'हां' मैं वहीं जा रहा हूं। मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि टैक्सी जैसे भगवान जगन्नाथ ने ही हमारे लिए भेजी है। हम पुरी पहुंचे होटल 'बे सैंड' में कमरा बुक किया तथा सायंकाल भगवान जगन्नाथ के दर्शनार्थ गए। लंबी लाइन होने के बावजूद सुबह दर्शन किए तथा बीच पर दो–तीन घंटे बिताने के बाद भोजन ग्रहण किया, वापस होटल आकर सांय 4:00 बजे भगवान जगन्नाथ के पुनः दर्शन किए व वापस पुरी बीच पर आए व समुद्र की लहरों का आनंद लिया। रात्रि जल्दी भोजनोपरांत सौ गये। सुबह जल्दी उठ कर भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर के वापिस

पुरी बीच पर पहुंच गए। कुछ देर समुद्री लहरो का आनंद लिया। सुबह के 11 बज चुके थे। उसके बाद एक टैक्सी ली जो कि काली एंबेसडर थी। मुझे तिरंगा फिल्म में ब्रिगेडियर बने राजकुमार की स्पेशल एंबेसडर कार जैसी फीलिंग आई, इसलिए हमने वही बुक कर ली। टैक्सी चालक को हमने कोणार्क सूर्य मंदिर, चिल्का झील, नंदन कानन आदि हेतु बुक कर लिया। सबसे पहले हम गुरु नानक जी द्वारा पुरी में बिताई एक उदासी के दौरान स्थापित गुरु घर (एक ऐतिहासिक गुरूद्वारा) गए, इसका यह महत्व है कि पुरी में खारा पानी होता था, गुरु नानक जी ने वहां कुएं की खुदाई करवाई, उसका पानी मीठा निकला वहां मीठे कुएं वाले गुरुद्वारे की स्थापना उनके द्वारा की गई। वहां से हम चिल्का झील गए। नाव से हम झील और समुद्र के संगम पर गए, बड़ा ही विहंगम दृश्य था। झील और बंगाल की खाड़ी पर हमने तकरीबन दो–तीन घंटे बिताए वहां हमने अद्भुत दृश्य देखा लाल केकड़ों के झुंड बड़े ही मनमोहक लग रहे थे। मेरा परिवार जो कि मुझे यात्रा पर निकलने से पहले ही किसी के साथ की दुहाई दे रहा था अब धीरे–धीरे आनंद की अनुभूति महसूस कर रहा था। चिल्का झील की यात्रा करने के उपरांत हम कोणार्क सूर्य मंदिर की तरफ निकल गए। वहां पहुंचते–पहुंचते हमें रात हो गई टैक्सी चालक ने हमें रास्ते में रोककर बताया कि यह चंद्र नागा नदी है जो कि रात में बड़ी ही डरावनी लगती है। उसकी लहरों की आवाज़ बहुत डरावनी थी। हम ज्यादा समय वहां नहीं रुके क्योंकि हमें कोणार्क मंदिर के दर्शन भी करने थे। रात की रोशनी में मंदिर की छटा देखते ही बनती थी। इसके उपरांत हम पुरी वापस आए। टैक्सी चालक हमें सीधे भगवान जगन्नाथ मंदिर ले गया हमने पुनः दर्शन किए रात को भोजन होटल में किया। सुबह जल्दी उठकर भगवान जगन्नाथ के पुनः दर्शन उपरांत हम होटल छोड़ उसी टैक्सी से रेलवे स्टेशन पहुंचे। पुरी से हावड़ा शताब्दी ट्रेन (जोकि मैंने पहले ही बुक करवा रखी थी) पकड़कर हम हावड़ा पहुंचे। स्टेशन पर बहुत भीड़ थी, एक बार तो मेरा परिवार इतनी भीड़ देखकर स्तब्ध रह गया। मैंने पहले से ही हावड़ा से नवद्वीप की टिकटें बुक करवा रखी थी इसलिए हमें ज्यादा परेशानी नहीं हुई। नवद्वीप से हम ऑटो लेकर हुबली नदी के किनारे मायापुर इस्कॉन मंदिर पहुंचे। मंदिर के प्रांगन में हमारे कमरे पहले से बुक थे इसलिए कोई परेशानी नहीं हुई गर्मी का आलम इतना था कि ए.सी. टैक्सी / ट्रेन व होटल ना होते तो बुरी हालत हो जाती। मंदिर में सांय काल के दर्शन करने के उपरांत हम अपने पहले से बुक कमरे में आकर सो गए। प्रसाद ग्रहण उपरांत हमें बहुत अच्छी नींद आई। सुबह जल्दी उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर मंदिर में पुनः दर्शन किए व वापस हावड़ा पहुंचे वहां टैक्सी व कमरा पहले से बुक था। हम कुछ विश्राम के बाद फिर निकल पड़े। हमने इस्कॉन मंदिर बिरला मंदिर काली घाट मंदिर आदि के दर्शन किए भोजन ग्रहण करने के उपरांत कमरे में विश्राम किया। हमारी सुबह 3:00 बजे की एयरपोर्ट हेतु टैक्सी बुक थी। सुबह 3:15 बजे टैक्सी पकड़कर एयरपोर्ट पहुंचे। कोलकाता एयरपोर्ट से जहाज पकड़ने हेतु लाइन में लगे, संघर्ष तो वहां भी किया लेकिन भगवान जगन्नाथ के आशीर्वाद से जहाज पकड़ लिया। हमारा जहाज़ 03–06–2016 को सुबह 5:40 पर कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर के लिए उड़ गया। हवाई जहाज ठीक सुबह 8:10 पर पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे पर पहुंच गया। टैक्सी वाला रमेश कुमार शर्मा के नाम की तख्ती लेकर खड़ा था, (क्योंकि टैक्सी पहले से बुक थी) मेरे परिवार को भी अब वी.आई.पी. फीलिंग का अनुभव हो रहा था। वह हमें होटल रिसोर्ट लेकर पहुंचा जो हमने पहले ही बुक करवा रखा था। हमने टैक्सी चालक को 11:00 बजे का

समय दिया था और हम भोजन ग्रहण कर, तैयार होकर आए। तो टैक्सी होटल के आगे खड़ी थी। टैक्सी ड्राइवर हमें यूपी का रहने वाला ही मिल गया जो व्यवहार का बड़ा ही अच्छा था। उसने हमें पोर्ट ब्लेयर के मुख्य स्थानों पर घुमाया जैसे रॉस आईलैंड व कई अन्य बीच, काला पानी जेल, (सेल्यूलर जेल) मेन बाजार आदि। उस दिन मेरी बेटी की तबियत खराब हो गई, इसलिए हम बाड़ा टांग, निकोबार व नील व राधा बीच तो नहीं जा सके, लेकिन फिर 04–06–2016 को सुबह फिर टैक्सी से हम नॉर्थ बे, वंडूर बीच, चिड़िया टापू, व टैरर बीच आदि घूमे, यह एक यादगार अनुभव था, 05–06–2016 को सुबह 8:30 बजे हमने पोर्ट ब्लेयर से कोलकाता की एयर इंडिया की (कुछ संघर्ष के बाद) फ्लाइट पकड़ी व कोलकाता पहुंचे। दिन में कोलकाता लोकल घूमे एवं शाम 6:30 बजे एयरपोर्ट पहुंच गए रात 8:00 बजे बहुत ही संघर्ष के बाद (क्योंकि मेरी श्रीमती एवं बेटे का आधार और पैन कार्ड नहीं था) गो इंडिया की फ्लाइट पकड़ी व रात 10:30 बजे दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचे। वहां आकर मेरी पत्नी की ज़िद थी कि वोल्वो बस में नहीं जाऊंगी, क्योंकि इतनी यात्रा करके उसके सर दर्द हो रहा था। मैंने वोल्वो की चार टिकटें बुक करवाई जो कि रात 1:00 बजे दिल्ली एयरपोर्ट से थी। जबरदस्ती सबको बस में बैठाया। भगवान के आशीर्वाद से 4 सीटें हमें मिल गई और बस चल पड़ी। मेरे परिवार के सदस्य 10 दिनों की अविस्मरणीय यादों वाली इतनी लंबी यात्रा के बाद, बस से वापस चंडीगढ़ आने पर सुबह 6:00 बजे ही आंख खोल पाए। कब बस चली, इतना तो याद था उन्हें, कब चंडीगढ़ पहुंच गए पता ही नहीं चला, यात्रा पर जाने से पहले तो मेरे परिवार वाले वाद–विवाद कर रहे थे कि किसी अन्य परिवार के साथ जाएंगे तो ठीक है, वरना अकेले नहीं जाना पर मेरे निश्चय के आगे उनकी एक न चली आज तक बच्चे इस अविस्मरणीय यात्रा को याद करके गदगद हो जाते हैं और कहते हैं कि पापा पहले हमें लगता था कि अन्य लोगों के साथ जाना चाहिए लेकिन इस यात्रा ने हमें बहुत ही अनुभव प्रदान किया है। न किसी की किच–किच, न किसी की चिड़–चिड़, न किसी का इंतजार ना किसी की इच्छा अनिच्छा। हम अपनी मस्ती में अपनी यात्रा करके आए। वह मनोरंजक दृश्य कभी भुलाया नहीं जा सकता जैसे ही हम अपने घर पहुंचे उसी दिन पहली बार भगवान जगन्नाथ की यात्रा हमारे घर के आगे से निकली, ऐसा लगा कि शायद दूसरी बार हम पर उनकी कृपा हुई।



> *जनता की बात जनता की भाषा में होनी चाहिए....*
>
> *– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी*



बढ़ता तकनीकी विकास और घटती मानसिक क्षमता

–दिलदार सिंह चौहान

आज तकनीक और जीवन एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं अर्थात् हम तकनीक के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। पर ध्यान रहे कहीं हम कम्प्यूटर को इंसान बनाने की होड़ में खुद ही टक–टक–टक कंप्यूटर न बन जाएँ। तकनीकी के क्षेत्र में नए आविष्कारों ने लोगों की जीवन शैली को आधुनिक और उन्नत बनाने में महान भूमिका निभाई है। क्योंकि जहाँ एक ओर तकनीक मनुष्य को जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान देने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य को दिमागी एवं शारीरिक कसरतों से बचाते हुए पंगु बना रही है।

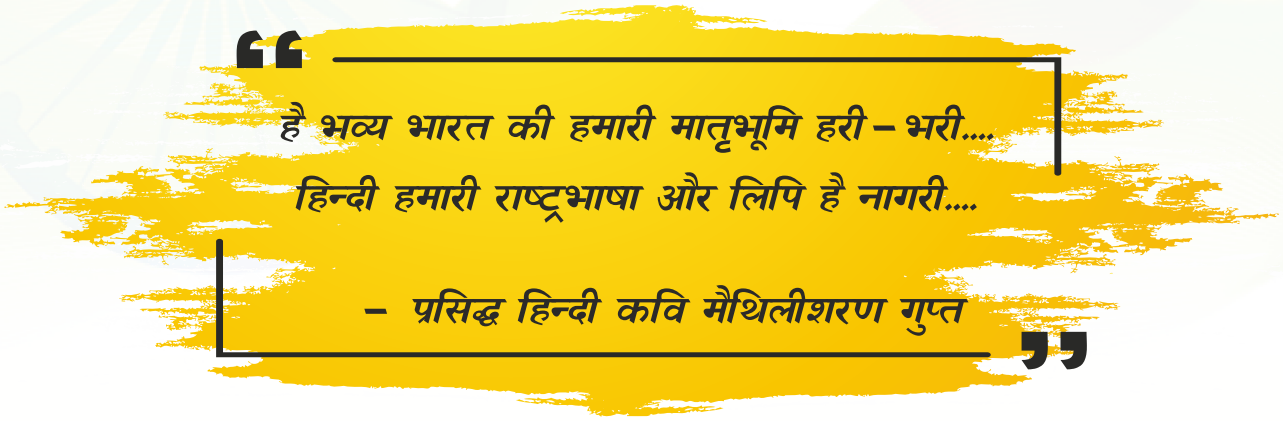
निःसंदेह मोबाईल फोन के असंख्य लाभ हैं। आपातकाल में चिकित्सक, पुलिस को बुलाना, घर से बाहर होने पर परिवार या कार्यालय के लोगों से संपर्क रखने, किसी को तत्काल महत्वपूर्ण संदेश पहुँचाने, किसी दुर्घटना का चित्र खींचने जैसे असंख्य लाभों के साथ–साथ इसकी कुछ हानियाँ भी हैं। मोबाईल फोन का प्रयोग नशे की हद तक बढ़ जाने के कारण यह अनेक दुर्घटनाओं का कारण भी बन रहे हैं। वाहन चलाते समय मोबाईल फोन पर बात करने से सड़कों पर रोज़ाना दुर्घटनाएँ हो रही हैं। कार्यालयों में काम करने वाले अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय के समय में ही काम छोड़कर मोबाईल पर खेल खेलते हैं, जिससे कार्यालय का कार्य बाधित होता है। इसका खामियाज़ा आम जन को भुगतना पड़ता है। अतः इस बात की महती आवश्यकता है कि मोबाइल फोन का उचित इस्तेमाल ही किया जाए और इसे अभिशाप बनने न देकर वरदान ही बना रहने दिया जाए। बीते कुछ समय पहले 'ब्लू व्हेल' नामक खेल से कई बच्चों की जान चली गई। ये सब इस तकनीकी के दुष्परिणाम हैं।

बीते सौ वर्षों मे विज्ञान और तकनीकी के रुतबे को आसानी से देखा जा सकता है। आज की तारीख में एक पूरी आभासी दुनिया को समाज के सामने खड़ा कर दिया गया है। संस्कृति, समानता, भाईचारा और आज़ादी बुजुर्ग लोगों के बीच सिमटकर रह गए हैं और आम मनुष्य भीड़ का हिस्सा बनकर रह गया है। कुछ इसी तरह तकनीकी का भी प्रभाव आम लोगों पर नज़र आ रहा है। आज वह बहुत ही सक्षम और समर्थ है, फिर भी तकनीकी के इस दौर में वह आत्मघाती और आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। आज वह क्यों इतना असहाय और असमर्थ है? जाहिर है कि विज्ञान के आधार पर विकसित की गई तकनीकी ने मनुष्य को देखने, सोचने, निरीक्षण करने, अनुभव करने, काम करने आदि को संकुचित कर दिया है। प्रौद्योगिकी के अपने गुण और दोष हैं लेकिन वर्तमान में प्रौद्योगिकी के बिना कोई विकास नहीं हो सकता। आर्थिक, सामाजिक और मानव विकास तकनीकी प्रगति पर निर्भर करता है। आदमी प्रौद्योगिकी की मदद से अपने जीवन को आसान और बेहतर बना सकते हैं। संगठन, तकनीक के साथ अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं और आर्थिक

समृद्धि के लिए नेतृत्व कर सकते हैं।

आर्थर सी क्लार्क ने कहा था– ''कोई भी पर्याप्त रूप से उन्नत प्रौद्योगिकी को जादू से कम नहीं मानना चाहिए।''

कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसका प्रयोग कैसे व कितना करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध, विचारों और तकनीकों का परिचय नई पीढ़ी में बड़े स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाया है ।





रामायण का एक मर्मस्पर्शी दृष्टान्त

—रमेश

रामायण...अर्थात् श्री राम जी की यात्रा। ऐसी अनवरत यात्रा जिसने विश्व समुदाय के मानस पटल पर प्रचंड प्रभाव डाला। कोई भी कालखंड हो, चाहे वह विद्या और समृद्धि का स्वर्णकाल रहा हो या संस्कृति पर घनघोर आक्रमण का काल, रामायण ने सदैव जनमानस के हृदय में आशा और आदर्श जीवन की लौ जलाए रखी है। हमारे पूर्वज मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्री राम जी के जीवन की समाज पर ऐसी अमिट छाप रही है कि उनके स्थापित आदर्श कीर्तिमान युगों युगों से प्रेरणादायक रहे हैं और आगे भी रहेंगे। रामायण मात्र एक पुस्तक नहीं है अपितु मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं, आदर्शों का सार है। जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका आदर्श वर्णन इस इतिहास ग्रन्थ में न मिलता हो। सामान्यतः पाठक किसी पुस्तक को पुस्तक की भांति ही पढ़ता है, परन्तु जब वह रामायण की विषयवस्तु की समग्रता में रमता जाता है तो उन शब्दों, श्लोकों, घटनाओं का स्वरुप, उसमें छुपे अद्भुत रहस्यों, उसकी गंभीरता, गूढ़ता में निमग्न सा हो जाता है। रामायण का पठन ही ऐसा है जैसे कि सम्पूर्ण रामायण आपके समक्ष घट रही हो।

इस महान इतिहासवृत्त के रचयिता महर्षि वाल्मीकि जी थे। ऋषि सामान्य व्यक्ति नहीं होता है। "ऋषति प्राप्नोति सर्वान् मन्त्रान, ज्ञानेन पश्यति संसार पारं वा" अर्थात् जो सब मन्त्रों (परम सत्य) का साक्षात दृष्टा हो, जो अपने ज्ञान से संसार (दृश्य) और उससे भी पार (अदृश्य लोकों को, सभी कालों को) देख और जान लेता है, वह ऋषि होता है। वही महर्षि वाल्मीकि जी जब घायल क्रौंची का अंतर्नाद देखते है तो वे उद्विग्न हो जाते हैं। उनके मुख से श्लोकबद्ध वाणी निसृत हुई—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः... ।" महर्षि के मुख से निकले उक्त छंदबद्ध वचन उनके किसी प्रयास के परिणाम नहीं थे। मैंने किसी के लिए शापित वचन क्यों बोले? वे बार—बार चिंतन कर रहे हैं कि.....शोकार्तेनास्य शकुनेः किमिदं व्याहृतं मया अर्थात इस पक्षी के शोक से व्यथित होकर मैंनें यह क्या कह दिया? ऋषि इतने विचलित हुए कि निरंतर इस घटना पर विचार करते रहे।

एक दिन जब महर्षि अपने आश्रम में बैठे थे, तभी वेदों के प्रकांड ज्ञाता ब्रह्मा जी उनके पास आये। महर्षि सहसा उठ कर उन्हें नमन तो कर देते हैं, परन्तु उनका ध्यान अभी भी उसी घटना में रमा हुआ है।".....यस्तादृशं चारुरवं क्रौञ्चं हन्यादकारणात।" ओह! उस पापात्मा व्याध ने बिना किसी अपराध के मनोहर कलरव करने वाले क्रौंच पक्षी के प्राण ले लिए !!! ब्रह्मा जी ऋषि की मनःस्थिति को समझ गए और उन्होंनें उनको इसी श्लोकबद्ध विधा में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी का जीवनवृत रचने की प्रेरणा दी।

निश्चय ही यह क्रौंच पक्षी की घटना पुराकाल में हुए राम–सीता रूपी क्रौंच–क्रौंची को क्रूर रावणरूपी व्याध द्वारा सीताहरण कर विलग कर देने के सम्बन्ध में है। इस प्रकार वाल्मीकि जी के रहस्यमयी घटना से दुखी हृदय की वेदना शोकवाणी द्वारा उच्चारित होकर श्लोकरूप/यशरूप हो गयी। महर्षि ने योग अवस्थित होकर उस सम्पूर्ण घटनाक्रम का यथावत् साक्षात्कार किया और उसे अपने काव्य में अंकित किया।

आज के घोर तार्किक युग में सामान्य जनमानस विशेषकर शिक्षित व्यक्ति तर्क–वितर्क करते हैं कि क्या रामकथा सत्य है? क्या कभी कोई ऐसा व्यक्ति धरातल पर हुआ था? आदि आदि, इन सब प्रश्नों के उत्तर स्वयं रामायण देती है। मानवता के इतने उन्नत शिखर पर पहुंची कथा को समझने में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है। घनघोर स्वाध्याय करना पड़ता है। कुतर्क करने में बुद्धि नहीं लगानी पड़ती है। संसार में अनगिनत महापुरुष हुए हैं, परन्तु श्री राम जी का जीवनवृत आज भी समाज के लिए आदर्श है। कोई भी समय रहा हो, उस कालखंड की श्रेष्ठतम मेधाओं को रामायण ने मार्गदर्शन दिया है। गुलामी और अत्याचारों के समय में जब गोस्वामी तुलसीदास जी ने पुनः रामायण को केंद्रीय विचार बनाया तो उससे उठे जन–जागरण के समक्ष अत्याचारियों की तलवारें भी कुछ नहीं कर सकीं। रामचरितमानस ने जनसामान्य के हृदय में फिर से सनातन भाव जागृत कर दिया, जिससे संस्कृति की रक्षा हुई। इसी जागृति का उदाहरण है कि हर भाषा में रामायण पर भाष्यटीका लिखे गए ।

रामायण की विश्व के सनातनी जनमानस में व्याप्ति इतनी प्रबल है कि राम शब्दवाले अनेकों स्थानों, व्यक्तियों के नाम प्रचुरता से मिल जायेंगे। ऐसा क्यों है ? क्यों राम जी का नाम अजर, अविनाशी है ? क्योंकि यह मनुष्यता के हृदय का विचार और आदर्श है! क्यों कोई अपने कष्टमय समय में हे राम! कहता है ? क्योंकि राम नाम सत्य है !!!



भगवान श्री राम जी का माता सीता व श्री लक्ष्मण जी सहित वन गमन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)



—राहुल रॉय

हम मनुष्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त बौद्धिक शक्ति के दम पर आदिमानव काल से लेकर वर्तमान काल तक का सफर तय कर चुके हैं। इस विकास क्रम में मनुष्य ने जीवन को सरल बनाने के लिये अनेक तकनीकों एवं यंत्रों यथा ट्रेन, बस, कंप्यूटर, रोबोट्स, अन्तरिक्ष यान इत्यादि का अविष्कार किया। पर अब इससे भी दो कदम आगे जाकर ईश्वर द्वारा मानवों को अन्य जीवों से इतर प्राप्त विशेष बौद्धिक शक्ति को भी कृत्रिम रूप से बनाने में प्रयासरत् है, जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नाम दिया गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात्त आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस वस्तुतः कंप्यूटर विज्ञान की ही एक शाखा है। जिसके अंतर्गत कंप्यूटर, कंप्यूटर नियंत्रित रोबोट या किसी सॉफ्टवेयर को इंसानों की तरह कार्य करने के लिए कार्यान्वित किया जाता है। ध्यातव्य है कि किसी भी वस्तु को बौद्धिक तभी कहा जा सकता है, जब उसमें तीन विशेषताएँ शामिल हों

(1) स्मृति क्षमता (मेमोरी पॉवर),

(2) निर्णय लेने व विश्लेषण करने की क्षमता एवं

(3) नए विचारों को उत्पन्न करने की क्षमता।

सुपर कंप्यूटर के निर्माण के साथ स्मृति व निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त कर ली गई है। यहाँ तक कि इन दोनों क्षेत्रों में कंप्यूटर मानवीय बुद्धि को भी चुनौती दे रहें हैं। किन्तु नए विचारों के सृजन की क्षमता अभी भी पूर्णता से हासिल नहीं हो सकी है, जो वैज्ञानिकों के समक्ष एक चुनौती है। इसे अमेरिकी वैज्ञानिक जॉन मैकार्थी ने 1950–60 के दशक में हल करने की दिशा में प्रारंभिक प्रयास किये, जिसके कारण इन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अग्रदूत कहा जाता है।

वैज्ञानिकों और अभियांत्रिकों ने इस दिशा में कुछ हद तक सफलता भी हासिल की है। यथास्वरूप माइक्रोसॉफ्ट की कोर्टना, एप्पल की सीरी आदि। इस लक्ष्य को तीव्रता से हासिल करने के लिए विश्व के विभिन्न राष्ट्र कई सम्मेलनों के द्वारा आपसी तकनीक एवं संसाधन साझा करने को सहमत भी हुए हैं। अपना प्रिय भारत भी उनमें से एक है। भारत में अपने स्तर पर भी नीति आयोग के साथ मिलकर विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर ली है और देश के प्रमुख उद्योगपतियों को भी इसमें शामिल किया है। ताकि नवाचार वृद्धि के साथ–साथ समय पर इसे प्राप्त कर सकें।

हालाँकि इन सब के अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का भी विस्तृत आंकलन अत्यंत आवश्यक है। जीवन के लगभग सभी क्षेत्र चाहे वह शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, ऊर्जा, परिवहन, कृषि एवं स्वास्थ्य आदि कुछ भी हो, पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से जटिल और तनावयुक्त कार्य भी मशीन की सहायता से किया जा सकेगा। जो कार्य मानव के लिए खतरनाक हो वैसे कार्य भी आसानी से संपन्न किया जा सकता है। किसी भी कार्य को शीघ्रता से त्रुटिरहित पूर्ण किया जा सकेगा। बाह्य अंतरिक्ष के अनसुलझे रहस्यों को भी सुलझाना सरल होगा। किसी भी कार्य को अल्प संसाधन और समय में पूर्ण कर वांछित परिणाम हासिल कर सकते हैं। यूँ कहे तो मानव जीवन को अत्यंत ही सरल कर देगा।

परन्तु इन सकारात्मक प्रभावों से प्रसन्न होकर इसके भयानक नकारात्मक पहलुओं को अनदेखा बिल्कुल भी नहीं किया जा सकता है। चूँकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्वयं निर्णय ले सकेगी ऐसे में मानव पर निर्भरता कम हो जाएगी जो इन्सान के लिए नुकसानदायक होगा। मशीन व इन्सान के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ जाएगी। इसमें मानव संवेदनाओ का अभाव होगा, जिसके कारण मानवीय गुणों की अनदेखी होने का खतरा भी होगा। इसका प्रयोग भयावह घटनाओं को अंजाम देने में हो सकता है। इसके खराब हो जाने की स्थिति में उसके द्वारा सम्पादित हो रहे कार्य अधूरे रहने की सम्भावना है। मानव को प्रतिस्थापित करने की क्षमता के कारण भयानक बेरोजगारी का डर है। सबसे प्रमुख, हर कार्य के लिए इसपर निर्भरता मानव के बौद्धिक विकास को रोक सकता है, जो मानव सभ्यता के लिए ही खतरा हो जाएगा।

अतः कुल मिलाकर कहें तो एक शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय हमारे लिए लाभदायक और नुकसानदेह दोनों हैं। फिलहाल इसका स्वरुप आगे क्या होगा हम सब नहीं जानते। निःसंदेह यह मानव सभ्यता का सबसे बड़ी आविष्कार होगा। पर खतरा यह भी है कि कहीं ये मानव सभ्यता की सबसे बड़ी भूल ही न साबित हो जाए, जो सम्पूर्ण मानव सभ्यता के अंत का कारण बन जाए। इसलिए इस सन्दर्भ में और अधिक शोध की आवश्यकता है।

“जो राष्ट्रप्रेमी है, उसे राष्ट्रभाषा प्रेमी होना चाहिए... – कन्नड़ भाषा के विद्वान तथा प्रसिद्ध दार्शनिक व देशभक्त रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर”



बेचारी नाक (व्यंग्य)

—सुरेन्द्र प्रसाद

नाक ईश्वर के द्वारा प्रदत्त मनुष्य के लिये सर्वोत्तम देन है, तभी पूरे मानव मुखमण्डल में आंख को कान और होंठ से एक इंच ऊंचे स्थान पर नवाज़ा गया है। पर नाक की नियति ठीक नहीं है। मुखमण्डल में सभी की अपनी–अपनी जोड़ी हैं। वे आपस में मस्ती करते हैं, होंठ दो, कान दो, आखें दो, होठ मुस्कुराते हैं, कान फड़फड़ाते हैं, खड़े भी हो जाते हैं, आँख तो पूछिये मत नैन मट्टका करती है, पर बेचारी नाक, दो छेद होने पर भी हमारी नाक एक है। वो न तो मुस्कुराती है, न ही फड़फड़ाती है, उसकी कोई जोड़ी नहीं है। नाक एक यंत्र है, यह एक तंत्र है, अन्धे को खीर और खिचड़ी का अन्तर बताने वाली यंत्र, स्वास (प्राणवायु) को संचालित करने वाली तंत्र। नाक न होती तो परफ्यूम फैक्ट्री बन्द हो जाती, प्रदूषण विभाग का तो अस्तित्व ही नहीं रहता, लोग घासलेट से भी शरीर पर स्प्रे कर लेते। चश्मे की फैक्ट्रियाँ नहीं होती और बेचारे चश्माधारी अपने चश्मे को कैसे पहनते। आँख से निकले पानी पर कवि, कविता करते हैं, उस पानी को मोती और निकलने को छलकना कहते है जबकि नाक से निकले पानी से लोग घृणा करते हैं, ये कैसी विडम्बना है। जबकि गन्दगी को देखते ही नाक अपने को सिकोड़ लेती है। इतनी उपयोगी देन के प्रति लोग पता नहीं क्यों इतना क्रूर रवैया अपनाते हैं। महिलाओं का तो सारा गुस्सा उनकी नाक पर ही रहता है, तभी वे अपनी नाक को छेद कर उसमें बड़ा सा नथ डालकर कान से बांध कर रखती हैं, जबकि बेचारी नाक भाग दौड़ भी नहीं करती। लोग नाक की सीध में चलने की नसीहत देते हैं। नाक कोई देने या लेने की वस्तु नहीं है पर साहित्य की भाषा में कोई किसी की नाक रख लेता है, तो कोई नाक काट लेता है, बच्चे पढ़ने में आनाकानी करते हैं, कोई किसी की नाक पकड़ कर ही प्यार करता है, तो कोई नाक में दम कर देता है। लक्ष्मण जी ने सूर्पनखा के किसी अंग को पसन्द नहीं किया, भला उसकी नाक ही काट ली। साहित्यकारों ने तो हद ही कर डाली, इतने उपयोगी अंग से नाको चना चबवा डाले, नाक जहां इतना सही कार्य कर रही है, तो चना चबवाने का काम भी नाक से क्यों ले रहे हो भाई, कुछ तो रहम करो, यह तो उसकी विडम्बना है जो इतना कार्य करने के बावजूद उसकी किस्मत में सिर्फ रगड़ लिखी हुई है। अक्सर लोग मंदिर के चौखट पर अपनी नाक रगड़कर याचना करते मिलेंगे। हे प्रभु अब तो हमारी नाक पर दया करो इसे रगड़ खाने से बचा लो प्रभु। मेरी नाक कटने से बचाओ और मेरी नाक रख लो।



तितली रानी

—विक्रम सिंह

बात इसी बरसात के मौसम के शुरुआत हिस्से की है। बड़ी उम्मीद के साथ कुछ बेल उगाने का विचार आया। अच्छे बीज लेकर आया। मिट्टी में खाद आदि डालकर विधिवत बीजारोपण सम्पन्न किया गया। कुछ बीज बड़े गमलों में लगाये व कुछ जमीन में। अब जिज्ञासा के साथ पौधे उगने का इंतजार होने लगा और धीरे–धीरे, अंकुर मिट्टी से बाहर आने लगा। जब हम इस तरह कुछ नया करते हैं तो उसका अनुभव थोड़ा अलग–सी खुशी देता है। धीरे–धीरे अंकुर आगे बढ़ कर बेलों में बदलने लगे। हमने बेलों को बढ़ने व फलने के लिए सहारा देने के लिए लकड़ियाँ व रस्सियाँ बाँधी ताकि वे खूब फले फूलें। कुल मिलाकर 10–12 बेलें थी जो इधर–उधर बढ़ रही थी। अब इन्तज़ार इस बात का था कि कब इन बेलों में फूल आयें व कब सब्जियां लगें। लौकी, पेठा, करेला, तोरी आदि की बेलों की हरियाली दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही थी। सबसे अच्छी व बड़ी बेल एक लौकी की थी, जो हर रोज भागती जा रही थी, क्योंकि इन बेलों ने गमलों व आंगन में लगे अन्य पौधों को लगभग अपने अन्दर छुपा लिया था। मेरी पत्नी को दूसरे पौधों की चिंता हो रही थी, जिनको ये बेलें दबाती जा रही थी। दरअसल बेलों के धागे जैसे रेशे सहारा पाने के लिए दूसरे पौधों को लपेटे में लेकर मरोड़ व तोड़ रहे थे। खैर आने वाले फल यानी सब्ज़ियों की उम्मीद में हमने इसे अनदेखा कर दिया। लौकी की बेल ने तो कमाल कर दिया। वह रस्सियों और दीवारों पर लगे टेलीफोन व केबल टी.वी. मोड की तारों के सहारे पहले प्रथम तल, फिर दूसरे तल और धीरे–धीरे छत के ऊपर तक पहुँच गयी। हमारे प्रथम तल व दूसरे तल के पड़ोसी भी शायद खुश हो रहे होंगे, कि कुछ सब्जियाँ उनकी बालकनी में ही आएँगी।

खैर आखिरकार वो समय आया जब उन बेलों मे फल आने लगे जिनको देखकर हमें बड़ी खुशी हो रही थी। देखने में भी बेल से घर की रूपरेखा ही बदल गयी थी। भरी पूरी बेल और बहुत सारे फूलों से माहौल खुशनुमा रहता है। धीरे–धीरे फूलों की कलियाँ बनने लगी, जिनको देखकर बहुत अच्छा लगता है। खासकर मेरी बेटी जिसे वो बहुत प्यारी लगती थी। अब उन कलियों से सब्जियाँ बनने का इंतजार लंबा होता गया। छोटी–छोटी कलियाँ धीरे–धीरे सूखकर झड़ने लगी। शुरू में मैंने सोचा शायद कुछ अनजान कारण से शुरू

हुई कलियाँ झड़ती होंगी। लेकिन हमारा फूल और कलियों को देखकर होने वाला रोमांच अजीब सी परेशानी में बदलने लगा। मैंने अपने गांव के एक बुजुर्ग ताऊजी को फोन किया क्योंकि वे इस तरह की खेती किया करते थे। उन्होंने बताया कि बेलों को सुबह–शाम गुगल का धुआं करना चाहिए इससे उनमें अच्छा फल आता है और कोई बीमारी आदि नहीं आती। अगले दिन मैं गुगल का धुआं करने के लिए सामान ले आया। विधिवत दो–चार दिन ताऊजी के बताये तरीके के अनुसार बेलों को धुआं किया। लेकिन इस सबके बावजूद बेलों की कलियाँ बनकर सूखना नहीं रुका। हमें लगा जैसे किसी की बुरी नज़र लग गई बेचारी हरी भरी बेल को। लेकिन मैं इतनी जल्दी हार मानने वालों में से नहीं था। मैंने इंटरनेट की मदद ली और यू–ट्यूब पर कुछ वीडियो देखे। वहां से भी एक–दो समाधान आजमाए, लेकिन किसी से कोई फायदा नहीं हो रहा था। सूखते फूलों–कलियों को देखकर बड़ा बुरा लग रहा था। फिर एक दिन विकिपीडिया पर पढ़कर पता किया कि पोलीनेशन यानि परागण प्रक्रिया ठीक से नहीं होने की वजह से ये समस्या आ रही थी। दरअसल बेल पर नर व मादा दो तरह के फूल खिलते हैं जिसमें से केवल मादा फूल ही फलों में विकसित होते हैं। लेकिन इसके लिए पोलीनेशन प्रक्रिया होनी ज़रूरी है, जिसके लिए तितलियों व मधुमक्खियों का होना ज़रूरी है। तब मैंने पिछले दिनों की स्मृतियों में जाकर देखा तो ध्यान आया कि मैंने आज तक कोई भी तितली अपनी बेलों पर नहीं देखी है। तितलियाँ व मधुमक्खियाँ आदि जब फूलों पर बैठकर रस लेती हैं तो परागकण उनके पैरों आदि में लग जाते हैं। एक फूल से दूसरे पर बैठकर रस लेती हैं और जब वे दूसरे फूलों पर होती हैं तो ये परागकण पोलीनेशन प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। इस तरह से फूल फलों में विकसित होते हैं।

अब मेरी परेशानी यह थी कि तितलियों और मधुमक्खियों पर एक और नुस्खा आज़माया जाए व बेलों पर पानी में शहद मिलाकर छिड़काव किया जाऐ ताकि उन पर तितलियां व मधुमक्खियां आकर्षित हों। लेकिन इस बार भी मुझे निराशा हाथ लगी। अब मेरी हिम्मत जवाब देने लगी थी। मेरे आंगन में बेलों पर सैकड़ों फूल खिले होंगे, लेकिन सभी धीरे–धीरे सूखकर गिरते रहें। अब मैंने बेलों को राम–भरोसे छोड़ दिया।

फिर एक दिन मैं सुबह उठकर बाहर गया तो देखा कि एक प्यारी–सी तितली जिसके काले और सफेद पंख थे, उस बेल पर मंडरा रही थी। मेरी खुशी का ठिकाना न था। वह तितली मुझे इतनी प्यारी लगी , जिसे बताना मेरे लिए कठिन है। मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया "अरे मेरी तितली रानी कहाँ थी तुम।" फिर धीरे–धीरे एक दो मधुमक्खियों जैसे कीट–पतंगे और दिखाई पड़े। मेरे मन में एक उम्मीद की किरण जागी। एक–दो दिन बाद मैंने देखा एक लौकी की कली विकसित हो रही थी। फिर तो जैसे वह कली हमारे लिए कौतुहल का विषय बन गयी। रोज सुबह–शाम उसे देखते कि कितनी बड़ी हो गयी है। धीरे–धीरे वो पूर्ण रूप से विकसित हो गई। उसके बाद तीन–चार लौकी और लगी जो पूरी बड़ी हुई। निःसंदेह इनका स्वाद

बाज़ार से खरीदी जाने वाली सब्ज़ियों से बहुत अच्छा था ।

एक दिन शाम के समय जब मैं उस दूसरी मंजिल तक फैली बेलों को देख रहा था तो विचार आया कि अगर इन पर लगे सभी फूल अच्छी तरह विकसित हो पाते तो कितना अच्छा रहता। सैंकड़ों फूल खिले लेकिन अधिकतर बेकार गये। बार–बार मन में सवाल उठ रहा था, कि आखिर तितलियां व दूसरे कीट–पतंग क्यों नहीं आये। फिर मुझे लगा कि आयेंगे कहाँ से, बेचारों के लिए हमने आशियाने ही नहीं बचा रखे हैं। रोज तो पेड़ों को काटते जा रहे हैं। हरियाली कम होती जा रही है। ईश्वर ने तो बहुत अनमोल चीजें बनाई लेकिन हम ही उनको संजोकर नहीं रख पा रहे हैं। प्रकृति का संतुलन बहुत नाजुक है और यह बात जब हम किसी अनुभव से गुजरते हैं तो बेहतर समझ आती है। तभी मैंनें निश्चय किया कि इसी बारिश में कुछ पेड़ लगाउंगा, शायद कुछ तितलियों और मधुमक्खियों को आशियाना मिल जाए, शायद आने वाले अगले सालों में मुझे बहुत सारी तितली रानियाँ देखने को मिलें।

“हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी... – स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी”



धर्म परिवर्तन

—बीर सिंह

भारत में हर आदमी अपने धर्म और उसके स्वीकृत विचारों का समाज में प्रचार प्रसार करने के लिये स्वतंत्र है। धर्म किसी भी व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। वह किस धर्म, मत पंथ अथवा उपासना पद्धति को स्वीकार करना चाहता है यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है। कुछ वर्षों में धर्म परिवर्तन के संदर्भ में भारत में कई मामले सामने आए हैं। धर्म परिवर्तन का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति करना होना चाहिए परन्तु इसके विपरीत यदि धर्म परिवर्तन लालच, दबाव, प्रलोभन के आधार पर होता है और इसका मूल लक्ष्य राजनैतिक है और रणनीतिक है। भारत में कुछ लोग विवाह करने के लिए ही अपना धर्म परिवर्तन करा लेते हैं। मानव सभ्यता ने पूर्व में धर्म परिवर्तन के नाम पर एक भयानक हिंसक दौर देखा है। आदिकाल से ही धर्म को लेकर रक्तरंजित संघर्ष होते रहे हैं। जब भी विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा किसी देश पर हमला किया गया और वहां जीत मिली, तो इसके बाद तेजी से स्थानीय नागरिकों का बलपूर्वक हिंसक ढंग से धर्मांतरण कराया गया वास्तव में कोई भी धर्म हिंसा, अराजकता और दुराचरण को स्वीकार नहीं करता, तो फिर मानव सभ्यता का इतिहास इतना रक्तरंजित क्यों रहा है। भारतीय राजनीति में संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म का व्यापक पैमाने पर दुरुपयोग होता रहा है। यहाँ धर्म के वास्तविक और आध्यात्मिक स्वरूप को ग्रहण करने के स्थान पर उसके प्रतीकों को अपनाया जाता है। इससे समाज में अनेक प्रकार की भ्रांतियां और सामुदायिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। इसे रोके जाने की आवश्यकता है। लोगों ने धर्म को मात्र अपनी स्वार्थपूर्ति का एक माध्यम बना कर रख दिया है। कुछ लोग अपनी इच्छाएँ भगवान पर लादने के लिय ही धार्मिक स्थानों पर जाते हैं तो कुछ लोग धन कमाने के लिए धर्म का मार्ग अपनाते हैं। कुछ राजनैतिक लोग वोट बैंक बनाने के लिए धर्म की शरण में जाते हैं।

वास्तव में धर्म एक व्यापक शब्द है। मज़हब, पंथ या संप्रदाय इसके सीमित रूप हैं। संसार के सभी धर्म मूल रूप से एक ही हैं। सभी मनुष्य के साथ सद्व्यवहार सिखाते हैं। ईश्वर किसी विशेष धर्म या जाति का नहीं है। सभी प्राणियों में रक्त का रंग एक ही है। इंसान ने ही अलग–अलग धर्म या मज़हब को बनाया है। ध्यान रहे मानवता से बड़ा धर्म या मज़हब दूसरा कोई नहीं हो सकता। वह मिलना सिखाता है, अलगाव नहीं। यदि धर्म को सही परिभाषित किया जाए व समझा जाए तो धर्म सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरोने का साधन बन सकता है। मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। धर्म जोड़ता है न कि तोड़ता है। आज के युग में धर्म परिवर्तन की बजाय हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है। नम्रता, सहनशीलता, दया भावना जैसे मानवीय गुणों को अपनाने की आवश्यकता है। हम मानवीय गुणों को अपनाकर ही मानव सभ्यता की सेवा कर पाएंगे ।

कविता





हाँ, मैं गाँव हूँ

—एकता

हाँ, मैं गाँव हूँ
मैं सहेज कर रखता हूँ सब लोगों को,
जब वो मुझमें रहते हैं तब भी और जब वो
चले जाते हैं उसके बाद उनकी यादों को भी।
सलीका अदब का अब भी ज़िन्दा है मुझमें,
शानो शौकत जमाने भर की पा लेने के बाद भी
थककर इंसान आज भी सिमटना चाहता है मुझमें।



हाँ, मैं गाँव हूँ
शांति से लबरेज और कोलाहल से दूर हूँ मैं,
लेकिन, आजकल शहरीकरण से मजबूर हूँ मैं।
पीपल के पेड़ की छाँव तले बुजुर्गों का डेरा,
ना कोई चिंता ना कोई तनाव
और घंटों तक चलने वाले उनके व्याख्यान।
गोधूली के समय खेत से लौटते पशुओं की धीमी चाल
और उनके गले में बजती घंटियों की वो मधुर आवाज।
बांधकर रखा है शालीनता की डोर से मैंने सबको
चालाकियां दूर तक नहीं और
मासूमियत का दौर आज भी बाकी है मुझमें।
शहरों के बंद दरवाजों जैसा हाल नहीं है मेरा,
दूर से भी कोई गुज़रता है तो आवाज देकर
बुलाने का रिवाज आज भी बाकी है मुझमें।



कलयुग

—कुलविंदर सिंह

कलयुग है भैया, यहां चलता रुपया
जहां अपनों की, अपने डूबोते हैं नैया
जहां गरीब दिल के अच्छे, और राजा भिखारी
राजनीति है अंधी, मति सब की है मारी
ना भाई ना बहना, ना बाप किसी का
अपने मतलब के लिए बनाते है मैया
कलयुग है भैया, जहां चलता रुपया
जहां अपनों की, अपने डूबोते है नैया

जहां बिकते है सारे, तू समझे हमारे
ना गरीबों का कोई, अमीरों के नज़ारे
दौलत, शोहरत के हर तरफ चर्चे
किसी को मिले ना, किसी के है खर्चे
गरीबों के लिए हैं घटिया रवैया,
कलयुग है भैया, जहां चलता रुपया
जहां अपनों की, अपने डूबोते है नैया

अभी तक ना समझा, क्या करने तू आया
मेरी मेरी करके तूने जन्म गवाया
मां बाप के तुमने, रिश्ते भुलाए
क्यों आश्रम हैं बनते, कोई समझ ना पाए
अपना फायदा, हर कोई सोचे
खोदते है औरों के, रास्ते में खाईयां,

कलयुग है भैया, जहां चलता रुपया
जहां अपनों की, अपने डूबोते हैं नैया

झूठे रांझों और हीरों, की दुनिया यही है
सच्चे फकीरों की, सच में कमी है
दो दिन ना चलता, अब रिश्ता किसी का
अब झूठी महबूबा, और झूठा है सईयां
कलयुग है भैया, जहां चलता रुपया
जहां अपनों की, अपने डूबोते हैं नैया

जो बोया है तुमने वही तो उगेगा
नफरत को कैसे फल मीठा लगेगा
छोड़ नफरत की राहें, बढ़ा मोहब्बत की बाहें
कुलविंदर मंज़िल मिली ना, चला गाड़ी का पहिया
कलयुग है भैया, जहां चलता रुपया
जहां अपनों की अपने डूबोते हैं नैया

"हिन्दी एक जानदार भाषा है.. यह जितनी बढ़ेगी, देश का उतना ही नाम होगा... स्वतंत्र भारत के पहले

– प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू"



अभागी प्रकृति

—रोहित सैनी

ढूंढ़ रही हूँ मैं, खुद को खुद के आगोश में
प्रकृति हूँ मैं, अभागी हूँ आज के परिवेश में
आधुनिकीकरण के नाम पे, मनुष्य बड़ी शान से
रौंद रहा है मुझ को, अपने अभिमान में,
अंजान है वो मेरे ह्रास के अंजाम से
खुद ही गुम जाएगा इसके परिणाम में
ढूंढ़ रही हूँ मैं, खुद को खुद के आगोश में
प्रकृति हूँ मैं, अभागी हूँ आज के परिवेश में
पर्वत जंगल नदियों जैसे कितने रतन संजोए है मुझ में,
अहमियत ना रही इन सब की क्योंकि मिल गया सब मुफ्त में,
उजाड़ के मुझे मनुष्य, खुद को कभी ना पाएगा सुख में,
समझ जा समय से नहीं तो सब बदल जाएगा प्रलय में
ढूंढ़ रही हूँ मैं, खुद को खुद के आगोश में
प्रकृति हूँ मैं, अभागी हूँ आज के परिवेश में
कर संकल्प लो आज सब, मुझको बचाने का
अधिक वृक्ष लगाने का और जंगलो को बचाने का,
बचा लो मेरे रत्न सभी, वरना खो दोगे सब व्यर्थ में,
तुम्हारा जीवन मुझ से, गांठ बांध लो बात ज़हन में
ढूंढ़ रही हूँ मैं, खुद को खुद के आगोश में
प्रकृति हूँ मैं, अभागी हूँ आज के परिवेश में



कलयुग की सीता

—तमन्ना सहगल

कच्ची मिट्टी की गुड़िया को
एक बंजर जमीन पर बोया था,
न स्नेह न ममता बरसी उस पे
जिसे माली ने सपनों की तरह संजोया था
पर गुड़िया बड़ी फनकारी थी...
दुश्वारियों से न हारी थी...
प्यार और मेहनत से नई ज़मीन पे
अपनी जगह बना ली थी
निश्छल गहरे प्रेम की तरह
वह अपने आँगन में बहती थी...
नन्ही कलियों की चहक से
वहाँ ठंडक रहती थी
बिजलियाँ कड़की, बारिश बरसी, तूफान आए
पर उसे उसकी जड़ों से न हिला पाए
धीरे धीरे कच्ची मिट्टी परिपक्व हुई
मन से संबल रही, शरीर से ध्वस्त हुई
आड़े तिरछे जीवन के रास्तों पे चल रही थी...
पैर लहु लुहान जरूर थे पर मन में
साहस की न कमी थी
जिसका हाथ थामा था, वह माथे का सरमाया था
दुनिया के तीरों से बचा, उसे आँचल में छिपाया था
जीवन ने कई रंग दिखाए
सारे तीर तलवार आजमाए

वह न गिरी, ज़िद पे अड़ी थी
कोई उसके घर की ओर देखे तो...
रक्षक बन पहरे पे खड़ी थी
स्वच्छंद, उनमुक्त वह किसी से न डरी थी
अपने किरदार, अपने चरित्र के दम पे
विपरीत हवाओं में भी बेपरवाह उड़ी थी
फिर ये क्या हुआ
कि आज वो घायल और ग़मगीन है
वो आज हताश क्यूँ जब कि बेला तो रंगीन है
चेहरे का रंग उतरा.... जिस्म बेजान है
फूलों के मौसम में वो क्यूँ रेगिस्तान है?
नम आँखें, मन बेचैन, रूह उसकी ज़ार ज़ार है
जिस पे उसने जीवन वारा
उसकी निगाहों में ही गुनहगार है?
स्वच्छंद मन, बेबाक कलम और ऊंची उड़ान
यही तो उसके गहने थे
देखने वालों को क्यूँ नहीं भाए
क्यूँ शूल बन उनके सीने में लगे थे
चक्की की तरह पिसी थी
घर को स्वर्ग बनाया था
मन भी क्यूँ आज़ाद रहा उसका
इसपे इल्ज़ाम लगाया था
टूट गयी थी...मुरझा गई थी
फिर भी.. मन की हर बात को सच्चाई से बताया था
पर सुनने वाले ने न सुना न माना था
सूनी आखें से वो बस देख रही थी कि
जिसे जिंदगी से ज्यादा चाहा
उसी ने भाला उठाया था
युगों युग बदल गए.... हाँ
सतयुग से कलयुग आया है
पर अफसोस
राम को आज भी सीता पर यकीन न आया है!!



जीवन पथ

—राहुल रॉय

तू कर्मयोगी है, करता रह कोशिश मेहनत रंग लाएगी
माना आज है परेशानियाँ पर याद रख कल खुशियाँ भी जरुर आयेंगी
ये बुरा दौर है जीवन का, कब ठहरा है?
तारीखों के संग ये भी गुजर जाएगा
रीत है जग की, सुख दुःख का चक्र चलता है
और निरंतर चलता ही जाएगा
पर याद रखना ये दुनिया है उस्ताद
कभी रुलाएगी तो कभी हँसाएगी
हर पल हर लम्हा न जाने लोगों के कितने रंग दिखाएंगी
इन सब से तू विचलित न होना ये तो मायाजाल है
तुझे तेरे राह से भटकाएगी
ईर्ष्यालुओं की टोली अलग से बाधा विघ्न पहुंचायेंगी
धैर्यवान बन के तन मन से खुद को तो करके देख समर्पित
फिर सफलता तुमसे बचकर आखिर कहाँ ही जाएगी
हर कामयाबी हर शोहरत तेरे नाम आयेंगी
ये देह तो नश्वर है एक दिन नष्ट हो जाएगी
पर कर्म तेरा अमर होकर जग में तेरा नाम अमिट कर जाएगी

नारी दिवस

—अक्षिता सिंह



चलो
इस साल भी
मना तो लोगे
नारी दिवस तुम,
बाँट भी लोगे तुम अपने
सशक्त विचार
कर लोगे सम्मानित भी
नारी को,

फिर 24 घंटे बाद क्या?
वही करोगे जो करते आए हो,
वही कहोगे जो कहते आए हो
शुरू हो जाएगा वहीं हैवानियत का सिलसिला,

अरे! कहां आसानी से मिटता है ये।
फिर वही किसी गांव में कर दी जाएगी
किसी लड़की की, खोखले सम्मान के लिए हत्या
फिर कहीं खींच लिया जाएगा किसी का दुपट्टा
फिर कहीं उछाल दिया जाएगा सपनों का कोई
पिटारा।

तो फिर क्यों मनाते हो
एक दिन नारी को
क्यों दिखावा करते हो
कि बदल गऐ हो तुम
हो तो अभी भी वैसे ही।
मत करो ये आडंबर,
छुपा भी कहां पाते हो अपनी ग्लानि को,
चाहे एक दिन हो या नौ
और तुम उसका जश्न मना भी कहा पाओगे,
जो अपने आप में, एक जश्न है।





कुदरत

—भूपिन्द्र सिंह मटौरिया

कुदरत है कादर का दर्पण
कुदरत की हर बात निराली
घने जंगल और ऊंचे पर्वत
बहती नदियाँ है मतवाली
हरा–भरा धरती का आँगन
फूल पौधे हैं मन को भाते
सुन्दर पंछी बैठ पेड़ों पर
मधुर, सुरीले गीत सुनाते



पवन, पानी और भोजन
जीवन का हर सुख देती है
अगर जो इसका रूप बिगाड़ा
अनचाहे फिर दुःख देती है
भूले से भी लालच में आ
कुदरत से छेड़छाड़ करो ना
सुविधाओं और सुख की खातिर
कुदरत से खिलवाड़ करो ना

हर बात की हद होती है
सोचो, हद को पार करो ना
कुदरत से भी प्यार करो सब
बेरहमी का वार करो ना।।



बेटियां

—अंजू बाला

धूप में छांव की तरह होती हैं बेटियां
हर वक्त घड़ी की तरह पास रहती हैं बेटियां
परेशानियों में साथ देती हैं बेटियां
मानो या ना मानो हंसाने का काम भी करती हैं यह बेटियां
तारों की तरह हर समय साथ रहती हैं यह बेटियां
प्यारी सी धुन हैं यह बेटियां
मां–बाप की प्यारी होती हैं यह बेटियां

एक दिन चली जाती हैं ससुराल छोड़कर,
पर मीठी सी याद बनकर खुशी भी दे जाती हैं यह बेटियां
बहन की सहेली और भाई की राखी पर कलाई का प्यारा बंधन भी हैं यह बेटियां
खुशकिस्मत से आती हैं यह बेटियां
घर–संसार को बढ़ाती हैं यह बेटियां
दोनों घरों का सम्मान करती हैं यह बेटियां
मायका क्या ? ससुराल को भी प्यार से रखती हैं यह बेटियां

पिता की शान, मां का मान रखती हैं यह बेटियां
अपने पिया के घर को स्वर्ग बनाती हैं यह बेटियां
घर में हो ज्यादा बेटियां तो परेशान हो जाते हैं मां–बाप पर मन ही मन जानते हैं
उनकी पहचान हैं यह बेटियां
घर में एक प्यारी खुशबू का एहसास हैं यह बेटियां
ना मेरी, ना तुम्हारी पूरी दुनिया को महका देती हैं यह बेटियां
पायल की छन–छन से घर को भी मोहित कर देती हैं यह बेटियां

पापा के काम से घर वापिस आने पर, मां की तरह कहां थे पापा ? पूछने वाली भी होती हैं यह बेटियां
मां से डांट खाने पर भी, पापा के साथ हंसने वाली होती हैं यह बेटियां
घर के रसोईघर में स्वाद खाना बनाकर मां–बाप को भी खुश करती हैं यह बेटियां
ससुराल जाने के बाद भी महकाती हैं मायके के घर को यह बेटियां
इसलिए ही तो मां–बाप और पिया की प्यारी भी होती हैं यह बेटियां

"लोग अपनी – अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें ....

अरविंद दर्शन के प्रणेता अरविंद घोष"

कार्यालयीन समाचार

कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस का आयोजन

कार्यालय परिसर में अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा स्वतंत्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस परम्परागत रूप से आयोजित किया गया तथा इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा ध्वजारोहण के पश्चात जलपान का आयोजन किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह एवं लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह का आयोजन

कार्यालय में दिनांक 26.10.2021 से 01.11.2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा अपने कार्यस्थल सीट पर रहते हुए सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा ली गई। मोबाइल पर ऑनलाइन शपथ का लिंक भेजा गया तथा सतर्कता जागरूकता सप्ताह पोस्टर प्रवेश स्थल पर लगाया गया और ई–पोस्टर मोबाइल पर भेजा गया। प्रधान महालेखाकार महोदया की मेज से सतर्कता जागरूकता सप्ताह का संदेश कार्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मोबाइल पर भेजा गया। सी. वी. सी. द्वारा तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री का लिंक कार्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मोबाइल पर भेजा गया। सी.वी.सी. सर्कुलर के अनुसार पी.आई.डी.पी.आई. पर ऑनलाइन व्याख्यान करवाया गया।

कार्यालय में दिनांक 16.11.2021 से 22.11.2021 तक लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह मनाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी कार्य स्थल सीट पर रहते हुए साफ–सफाई तथा दस्तावेजों की निराई छटाई हेतु संदेश का मोबाइल पर ऑनलाइन लिंक भेजा गया व सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्य स्थल सीट पर रहते हुए कानून निर्माताओं के साथ संगोष्ठी प्रातः 11:00 बजे तथा निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का सायं 03:00 से 04:00 बजे तक छठे तल पर आयोजित करवाई गयी तथा लेखापरीक्षा जागरूकता सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी का आयोजन करवाया गया।

COVID-19 परीक्षण और टीकाकरण कैम्प

कार्यालय में दिनांक 11.05.2021 को Government Medical College & Hospital Sector- 32, Chandigarh से डॉक्टरों की टीम को बुलवा कर कोरोना वैक्सीन कैंप लगवाया गया, जिसमें कार्यालय के 45 साल से अधिक उम्र के अधिकारियों/कर्मचारियों को कोरोना वैक्सीन लगवाई गयी व दिनांक 02.06.2021 को कार्यालय में 18 साल से अधिक उम्र के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों

को कोरोना वैक्सीन लगवाई गयी।

राष्ट्रीय एकता दिवस, आतंकवाद विरोधी दिवस एवं सांप्रदायिक सद्भावना दिवस, का आयोजन

कार्यालय में दिनांक 31.10.2021 को सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर अपने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने और मजबूत करने के लिए अपने समर्पण को बढ़ावा देने और मज़बूत करने का संकल्प मोबाइल पर भेजा गया। दिनांक 21.05.2021 को आतंकवाद विरोधी दिवस पर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने आतंकवाद विरोधी दिवस की शपथ ली। दिनांक 19.11.2021 से 25.11.2021 तक सांप्रदायिक सद्भाव सप्ताह मनाया गया। प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा 25.11.2021 को सांप्रदायिक सद्भाव सन्देश दिया गया, जो वाट्स ऐप/ई मेल द्वारा कल्याण अनुभाग की तरफ से सभी अधिकारियों /कर्मचारियों को भेज दिया गया।

यौन उत्पीड़न अधिनियम जागरूकता

कार्यालय में दिनांक 09.12.2021 सभी महिला कर्मचारियों/अधिकारियों को यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत जागरूक किया गया।

मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन

कार्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के मनोरंजन के लिए कार्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रमों (Tug of War, Sack Race, Antakshri, Music Chair etc.) का आयोजन दिनांक 10.09.2021 को सफलतापूर्वक किया गया।

खेल कोटा भर्ती

मुख्यालय के आदेशानुसार दिसम्बर 2021 कार्यालय में खेल कोटा भर्ती के आधार पर कार्यालय में टेबल टेनिस, फुटबॉल, हॉकी व क्रिकेट के खिलाड़ियों की भर्ती के लिए ट्रायल करवाऐ गये व भर्ती की प्रकिया को सफलतापूर्वक करवाया गया।

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है
तो चाहे कोई माने या न माने,
राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है,
क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है,
वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता... –
– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत हो रहे है। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। ''सुगंधा'' परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है ।

क्रमांक	नाम व पदनाम (श्री / सुश्री)	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	विनोद कुमार वशिष्ठ, पर्यवेक्षक	31.03.2021
2.	रमेल सिंह, व.ले.प.	31.03.2021
3.	नरिंद्र सिंह, व.ले.प.अ.	31.03.2021 (स्वैच्छिक)
4.	बलजीत कुमार मेहरा, व.उ.म.ले.	30.04.2021
5.	ओम प्रकाश सांगवान, व.ले.प.अ.	31.05.2021
6.	सुषमा कुमारी रैना, स.ले.प.अ.	30.06.2021
7.	राजेन्द्र प्रसाद, बहुकार्यकर्मी	31.08.2021
8.	अरुण कुमार गुप्ता, व.ले.प.अ.	31.10.2021
9.	रणदीप राज, स.ले.प.अ.	31.10.2021
10.	अशोक कुमार अदलखा, व.ले.प.अ.	31.10.2021
11.	संजय कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	15.10.2021 (स्वैच्छिक)
12.	प्रमोद कुमार, व.ले.प.अ.	31.10.2021 (स्वैच्छिक)
13.	सुनीता रावल, व.ले.प.अ.	30.11.2021
14.	विजय कुमार अग्रवाल, व.ले.प.अ.	31.12.2021
15.	परमल सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2021
16.	आरती मुंजाल, पर्यवेक्षक	31.12.2021

17.	बाबू राम, व.ले.प.अ.	31.01.2022
18.	सुखबीर शर्मा, व.ले.प.अ.	31.01.2022
19.	खेम राज, स.ले.प.अ.	31.01.2022
20	सतीश कुमार–1, पर्यवेक्षक	31.01.2022
21	रेशम सिंह सहादरा, व.ले.प.अ.	28.02.2022
22	जगजीत सिंह, व.ले.प.अ	28.02.2022
23	राजीव कुमार राठौर, स.ले.प.अ.	28.02.2022
24	सतवंत कौर, पर्यवेक्षक	28.02.2022
25	बलजीत सिंह गिल, पर्यवेक्षक	31.03.2022
26	बलविंदर कौर, पर्यवेक्षक	31.03.2022
27	भारत भूषण, स.ले.प.अ.	31.03.2022
28	हरि पाल, सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2022

श्रद्धांजलि

जन्म एवं मृत्यु सब विधि का विधान है। हमें बहुत दुख होता है जब विधि द्वारा बनाए विधान के अनुसार हमारे बीच से कोई अपना प्रिय काल का ग्रास बन जाता है।

हमारे कार्यालय के निम्नांकित साथी के असामयिक निधन की पीड़ा हमें गत वर्ष सहनी पड़ी। 'सुगंधा' परिवार दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है कि प्रभु उनकी आत्मा को चिर–शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को विपदा की इस घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

	नाम एवं पदनाम	देहावसान तिथि
1.	श्री कौशल प्रसाद, स.ले.प.अ.	01.05.2021
2.	श्री रविन्द्र पाल सिंह, पर्यवेक्षक	13.01.2022

ध्वजारोहण





बटरफ्लाई गार्डन, चंडीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017